बेहद वाणी

नोट : यह बेहद वाणी जब श्री प्राणनाथजी महाराज गुजरात (अहमदाबाद) से दीपबन्दर जा रहे थे, तब समुद्र में उतरी।

बेहदी साथ तमे सांभलो, बोली बेहद वाणी।
मोटा मोटेरा थई गया, कोणे नव जाणी।। १ ।।

हे बेहद के सुन्दरसाथजी! तुमको क्षर के पार का ज्ञान जो मैंने सुनाया है, मेरे से पहले बड़े-बड़े ज्ञानी, देवी-देवता हो गए, पर किसी को भी चौदह लोकों तथा नारायण से आगे की जानकारी नहीं हुई। यह जानकारी किसी को प्राप्त नहीं हुई।

अनेक उपाय कीधां घणे, केमे न कलाणी।
कोणे न ओलखांणी ए निध, बुध विना कोणे न जाणी।। २ ।।

सभी ने अनेक प्रकार के प्रयत्न किए, पर किसी को पहचान नहीं हुई। किसी को इस ज्ञान की पहचान नहीं हुई, क्योंकि उनके पास जागृत बुद्धि (पराशक्ति) नहीं थी।

आव्या ते बुधना सागर, बुध रुदे भराणी।
भगवानजी ने महादेवजी, पूछे बेहद वाणी।। ३ ।।

वरना बड़े-बड़े शास्त्रों के ज्ञाता ज्ञान से भरे पूरे आये, परन्तु उन्हें भी इस ज्ञान की पहचान नहीं हुई। यहां तक कि भगवान शंकर भी भगवान विष्णु से इस ज्ञान को जानने की चाह करते हैं।

ब्रह्मांड कोट वही गया, कोणे न सुणाणी।
चौद भवनना जे धणी, खंते खोलाणी।। ४ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, पर बेहद के ज्ञान को किसी ने नहीं सुनाया। चौदह लोकों के मालिक भगवान विष्णु ने भी बहुत खोज की।

सुकजी सनकादिक ने कबीर, रह्या घणुए ताणी।
कोणे न आवी एणी प्रेमल, रह्या रुदेमां आणी।। ५ ।।

शुकदेवजी, सनकादिक (सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार) और कबीर ने भी बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें इसकी सुगन्ध तक नहीं मिली। हृदय में सोचते ही रह गए।

एक लवाने कारणे, लखमी जी राणी।
सात कल्पांत लगे तप करया, तोहे न केहेवाणी।। ६ ।।

एक शब्द के लिए लक्ष्मीजी को भी ठुकरा दिया गया। जिन्होंने सात कल्पान्त तक तप किया फिर भी उनको नहीं कही।

ए रसनी जे वासना, केहेने न अपाणी।
ते वृज सुन्दरी सुखमां, अणजाणे माणी।। ७ ।।

इस रस को लेने वाली जो वासनाएं (आत्माएं) हैं, उनको भी किसी ने नहीं दिया। ब्रज की गोपियों ने (जिनके अन्दर परमधाम की आत्माएं थीं) उस सुख को अनजाने में प्राप्त किया।

ए निध पोताना घरतणी, एम बोले वाणी।
श्री धाम धणी सूं रामत, रमे धणियाणी।। ८ ।।

यह न्यामत अपने घर की है, ऐसा वाणी बताती है। धाम के धनी से उनकी अंगनाओं ने ही ब्रज की रामत का सुख लिया।

Nijanand App

अणू चोंच पात्र एह विना, बीजा कोणे न देवाणी।
दोड कीधी मोटे घणी, कोणे न लेवाणी।। ९ ।।

इनके बिना कण के समान भी दूसरे किसी को भी नहीं मिला। इस ब्रह्माण्ड के बड़े-बड़े देवी-देवताओं ने (पात्रों ने) बहुत परिश्रम किया फिर भी कोई नहीं पा सका।

साथ सुपने आवियो, इछा रामत जाणी।
बेहद धणी पधारिया, बेहद वात वंचाणी।। १० ।।

ब्रह्मसृष्टियां स्वप्न में खेल देखने की इच्छा से आईं। उनके लिए उनके बेहद के धनी यहां पधारे तो बेहद की वाणी (बात) उनको बताई।

तेडी सिधावसे साथने, प्रगट थासे वाणी।
बुधतणो अवतार कहिए, मोटी बुध जणाणी।। ११ ।।

इस वाणी से सुन्दरसाथ को बुलाकर घर ले जाएंगे। इन धनी को बुद्धि (जागृत बुद्धि—पराशक्ति) के अवतार ही कहना। इन्होंने ही बड़ी बुद्धि की जानकारी दी है।

जेणे ए निध खोली खंत करी, रुदयामां आणी।
धंन धंन कहिए मोटी बुध, निध ए निरखाणी।। १२ ।।

जिन्होंने इस न्यामत को लगन से खोजकर अपने हृदय में बिठाया, ऐसे बड़ी बुद्धि के धनी धन्य हैं। उन्होंने ही जागृत बुद्धि की पहचान कराई।

नौतनपुरी मां ए निध, सारी सनंधे गोताणी।
निरखी गोती ने नेहकरी, साथमां संभलाणी।। १३ ।।

नौतनपुरी में यह निधि हर तरह से खोजी गई, परखी गई और बड़े प्यार से सुन्दरसाथ को सुनाई गई।

बेहद केरी वाटडी, जोजो तमे साथ।
तारतम तेज छे निरमल, जोत अति अजवास।। १४ ।।

बेहद के इस रास्ते को, हे सुन्दरसाथजी! तुम देखो। तारतम की रोशनी साफ है और इसकी ज्योति में उजाला अधिक है।

प्रगट थासे पाधरी, जोजो रास प्रकास।
ग्रन्थ सघलानी उतपन, वाणी वेद व्यास।। १५ ।।

इससे रास्ता सीधा मिल जाएगा। रास और प्रकाश को व्यासजी की वाणी तथा सब धर्म ग्रन्थों की वाणी से तोलकर देखो।

रुदे एहना सुत तणे, भागवत अभ्यास।
बेहद वाटे आवियो, सुकजी पूरवा साख।। १६ ।।

व्यासजी के पुत्र शुकदेवजी के हृदय में भागवत का ज्ञान प्रकट हुआ। शुकदेवजी बेहद की गवाही देने के लिए आगे आए।

Nijanand App

ब्रह्मांड विखे वाणी घणी, केहेना नाम लेवाय।
साख पूरे सहु ए वाटनी, जो जीवे जोवाय।। १७ ।।

इस ब्रह्माण्ड में बहुत-सी वाणी हैं, किन-किनका नाम लूं? सभी इस रास्ते की गवाही देती हैं। यदि कोई जीव इन वाणियों को देखे तो समझ जाएगा कि सब ग्रन्थ बेहद के ज्ञान की गवाहियां देते हैं।

ए वाणी ए वाटडी, कहींए प्रगट न थई।
धणी ब्रह्मांडने खप करया, रह्या जोई जोई।। १८ ।।

यह वाणी और यह रास्ता कहीं भी जाहिर न हुआ। ब्रह्माण्ड के धनी विष्णु भगवान भी मेहनत कर थक गए और देखते ही रह गए।

ए वाट वाणी जोई घणे, केहेने हाथ न आवी।
नाम ब्रह्मांडना धणी कह्या, बीजा सूं करूं सुणावी।। १९ ।।

यह रास्ता और वाणी बहुतों ने देखी, पर यह किसी को नहीं मिली। ब्रह्माण्ड के मालिक विष्णु भगवान कहलाते हैं, जब यह वाणी उनको ही नहीं मिली तो दूसरे का नाम कैसे कहूं?

ते वाट प्रगट पाधरी, कीधी आवार।
धंन धंन ब्रह्मांड ए थयो, धंन धंन नर नार।। २० ।।

अब यह रास्ता सीधा है। इस बार के नर-नारी धन्य हैं तथा यह ब्रह्माण्ड भी धन्य है।

धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां ए निध आवी।
धंन धंन खंड ते भरथनो, लीला ए पधरावी।। २१ ।।

कलियुग भी धन्य हो गया जिसमें यह न्यामत (बेहद वाणी) आई। भरतखण्ड भी धन्य है जिसमें यह लीला आई।

धंन धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन वृजवासी।
अग्यार वरस लगे लीला करी, चौद भवन प्रकासी।। २२ ।।

गोकुल भी धन्य है और यमुना के तट भी धन्य हैं। (जो गोकुल अखण्ड हो गया है)। ब्रजवासी भी धन्य हैं। ब्रज के अन्दर ग्यारह वर्ष लीला कर (उनको अखण्ड कर दिया और अब उस लीला और उस ब्रह्माण्ड जिसको कोई जानता ही नहीं) यहां चौदह लोकों में इस बेहद वाणी के ज्ञान से जाहिर कर दिया।

चौद भवन सुपन तणा, जोवा आव्यो छे साथे।
ए ब्रह्मांड मुक्त पामसे, सोणो जागे समासे।। २३ ।।

चौदह भुवन स्वप्न के समान हैं, इन्हें देखने के लिए सुन्दरसाथ आया है। अब यह ब्रह्माण्ड भी मुक्ति पा जाएगा। जागने पर स्वप्न समाप्त हो जाएगा (ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा)।

वली जोगमायानो ब्रह्मांड, कीधो रमवा रास।
रामत रमे श्री राज सूं, साथ सकल उलास।। २४ ।।

फिर रास खेलने के लिए योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया गया, इसमें सब सुन्दरसाथ ने उमंग में श्री राजजी के साथ रामत (लीला) खेली।

Nijanand App

रास रामत छे नित नवी, केमे नव थाय भंग।
साथ रमे सुपनमां, जोगमाया ने रंग।। २५ ।।

रास की नई-नई रामतें (लीलाएं) योगमाया के ब्रह्माण्ड में खेले जाने से किसी प्रकार भंग नहीं होंगी। सुन्दरसाथ योगमाया के ब्रह्माण्ड में अनजाने से खेले।

जुओ साथ सुपन विखे, रामत रमे छे जेम।
एक पखे साथ जागियो, रामत तेमनी तेम।। २६ ।।

हे सुन्दरसाथ ! देखो, हमने जो अनजाने में रामत खेली थी, वह रामत तो आज भी ज्यों की त्यों हो रही है और हम उसे देखकर इस तरीके से परमधाम गए।

वली ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां आपण आव्या।
धाख रही जोया तणी, आपण तेहज लाव्या।। २७ ।।

इसके बाद यह ब्रह्माण्ड नया बना जिसमें हम आए हैं। खेल देखने की जो इच्छा बाकी थी उसी इच्छा को लेकर आए हैं।

ब्रह्मांड त्रणे दीठा अमे, रामत अलेखे।
जागीने करसूं वातडी, जे सुपन मांहें देखे।। २८ ।।

तीन ब्रह्माण्ड (ब्रज-रास-जागनी) हमने देखे और अनगिनत खेल खेले। अब जागकर परमधाम में बातें करेंगे जो हमने स्वप्न में देखीं।

वली आ ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां राख्यो छे सेर।
आंहीं पण कीधी वातडी, साथ सिधाव्यो घेर।। २९ ।।

ब्रज रास के बाद में फिर यह ब्रह्माण्ड बना जिसमें ज्ञान आया। ब्रज रास की लीला करके सुन्दरसाथ घर गए जिसका ज्ञान भी हमने यहां बताया।

जेम हर्‌या ब्रह्माए वाछरू, गोवाल संघाते।
ततखिण नवा निपना, आपोपणी भांतें।। ३० ।।

जिस तरह से ब्रह्माजी ने ग्वाल-बाल सहित बछड़ों का हरण किया था और वालाजी ने उसी पल नए बना दिए थे।

गोकुल मांहें आप आपणे, घेर सहु कोई आव्या
खबर न पडी केहेने, एवी रची माया।। ३१ ।।

गोकुल में सभी ग्वाल-बाल, बछड़े अपने घर आए। यह माया के बने हुए हैं, परन्तु इस बात की खबर किसी को नहीं लगी। ऐसी माया रच दी।

एणे द्रष्टांते प्रीछजो, सेर राख्यो ए भांते।
माया तणो ए बल जुओ, केवो रच्यो छे खांते।। ३२ ।।

इस दृष्टान्त से समझना, इस तरह से यह ब्रह्माण्ड बना। किसी को यह खबर ही नहीं हुई कि हम नए बने हैं। माया की ताकत देखो कि उसने धनी के आदेश से ज्यों की त्यों रचना कर दी।

Nijanand App

साथ सकल सिधावियो, श्रीकृष्ण जी संघाते।
ते रमे छे रामत रासनी, आंही उठ्या प्रभाते।। ३३ ।।

सब सुन्दरसाथ श्री कृष्णजी के साथ चले गए और वह आज भी योगमाया के ब्रह्माण्ड में रास खेल रहे हैं तथा इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में नए स्वरूप आ गए। श्री कृष्ण और गोपियों के रूप बन गए जो वेद ऋचा कहलाती है।

तेहज गोकुल जमुना त्रट, जाणे ते वृजवासी।
जाणे रामत रास रमी करी, सहु उठ्या उलासी।। ३४ ।।

सबको यही लगा कि यह वही गोकुल है। वही यमुना तट है और वही ब्रजवासी हैं जो रास की रामत खेलकर आए हैं।

जाणे तेज ब्रह्मांड ते रामत, जेम रमतां सदाय।
आ ते ब्रह्मांड उपनूं, एणीं रे अदाय।। ३५ ।।

अब वह जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है और वही खेल है जो सदा से ब्रज में खेलते थे। इस तरीके से यह नया ब्रह्माण्ड (तीसरा जागनी का) बना।

बंने ब्रह्मांड वचमां, सेर राख्यो छे सार।
खबर न पडी केहेने, बेहदनो बार।। ३६ ।।

दोनों ब्रह्माण्डों के बीच में घर जाने के रास्ते हैं (पर किसी को यह पता नहीं है)। इस बेहद के रास्ते की (ज्ञान की) किसी को भी खबर नहीं हुई।

बेहदी साथ आवियो, एणे दरवाजे।
आ ब्रह्मांड मायातणो, रामत जोवा काजे।। ३७ ।।

बेहद के साथी अब इस तीसरे ब्रह्माण्ड में माया की रामत देखने के लिए उसी रास्ते से आए हैं।

सूं जाणे हदना जीवडा, बेहदनी वाते।
मांहें रमे ते रामत रातडी, आंहीं उठियां प्रभाते।। ३८ ।।

इन बेहद की बातों को माया के जीव क्या समझें। यह बेहद के जीव जो इस ब्रह्माण्ड में प्रतिबिम्ब की लीला में बने हैं, यही समझते हैं कि हम ही हैं जो रात को रास खेल रहे थे। अब हम ही यहां प्रातः उठे हैं।

पाछला साथमां रामत, दिन अग्यार कीधी।
अक्रूर तेडी सिधावियो, जई मथुरा लीधी।। ३९ ।।

यह जो, इस नए ब्रह्माण्ड में ग्वाल गोपी-कृष्ण बने, उन्होंने ग्यारह दिन लीला की। अक्रूर इनको बुलाकर मथुरा ले गये।

तिहां लगे वेख वालातणो, मुक्त कंसने दीधी।
रास पाछली रामत, लीला जाणजो बीजी।। ४० ।।

यहां तक भेष, हमारे वालाजी ने जो अखण्ड रास में धारण किया था, उसी की नकल रही। उन्होंने कंस को मुक्त किया। इस तरह से रास की रामत के बाद की यह दूसरी लीला है (पहली गोकुल की सात दिन और दूसरी मथुरा की चार दिन की)।

Nijanand App

टीलू दई उग्रसेंनने, वेख सहित सिधाव्या।
इहांथी लीला अवतारनी, वसुदेव वधाव्या।। ४१ ।।

उग्रसेन को टीका देकर भेष सहित चले गए। अब यहां से विष्णु भगवान के अवतार की लीला शुरू होती है। कारागृह (जेल) में वसुदेव से मिले।

हवे एह लीला हदतणी, तेतां सहु कोई केहेसे।
पण बेहद वाणी अम विना, बीजो कोंण देसे।। ४२ ।।

अब यहां से लीला हद की (चौदह लोकों) है, जिसका सब कोई वर्णन करेंगे, परन्तु बेहद की वाणी हमारे बिना दूसरा कौन देगा?

एणी वाटे ऊभो नरसैयो, लीला बेहद गाय।
जोर करे बलियो घणो, रासमां ना पेसाय।। ४३ ।।

इस रास्ते पर नरसैयां खड़ा होकर बेहद की लीला गाता है। उसने बड़ी ताकत लगाई फिर भी रास के अन्दर नहीं जा सका।

जे बल कीधूं नरसैए, एवो करे न कोय।
हदनो जीव बेहदनी, ऊभो लीला जोय।। ४४ ।।

जो ताकत नरसैयां ने लगाई ऐसी दूसरा कोई नहीं लगाता। यह हद का जीव था जिसने बेहद की लीला को खड़े होकर देखा (सुना)।

ए रस काजे दोड्यो नरसैयो, वाणी करे रे पुकार।
रस थयो मांहेंली गमां, आडा दरवाजा चार।। ४५ ।।

इस रास के वास्ते नरसैयां दौड़ा, ऐसा वाणी बताती है। इस प्रतिबिम्ब के अन्दर रास का रस रह गया उसके आड़े तन के चार परदे आ गए। क्षर ब्रह्माण्ड के स्वरूप नारायण के शरीर के चार भाग स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण जिसका उसे ज्ञान नहीं था।

बारणे इन बेहद तणे, लेहेर टाढक आवे।
प्रेमल कांईक रसतणी, बारणे रे जणावे।। ४६ ।।

बेहद के इस दरवाजे पर ठंडी हवा की लहरें आ रही हैं। उसके प्रेम रस की सुगन्ध दरवाजे में खड़ा होकर ले रहा है।

एणे बारणे नरसैयो, घणूं टाढक पाम्यो।
लीला पाछला साथमां, सुख लईने जाम्यो।। ४७ ।।

इस दरवाजे में से नरसैयां ने बहुत शीतलता पाई और उस नए संसार के जीवों की लीला (प्रतिबिम्ब की रास जो यहां हुई) का सुख लिया।

सुकजीए लीला वरणवी, वृज रास वखाण्यो।
बेहदनी वाणी विना, ठाम ठाम बंधाण्यो।। ४८ ।।

शुकदेवजी ने यहां खेली गई ब्रज की लीला (सात दिन की) और छः महीने की रास की एक रात्रि जो यहां हुई का बखान किया, परन्तु बेहद के ज्ञान के बिना संदेहों से भर गया। यह वर्णन स्पष्ट रूप से स्थान-स्थान पर इस भेद को न खोल सका।

Nijanand App

नहीं तो एम केम वरणवे, केम थाय पंच अध्याई।
स्कंध बारे भागवतना, तेथी थाय कोट सवाई।।४९।।

नहीं तो ऐसे किस तरह वर्णन करते और रास का वर्णन पांच अध्यायों में ही कैसे समाप्त कर देते? भागवत के बारह स्कन्ध हैं। यदि अखण्ड रास का ज्ञान हो जाता तो करोड़ों गुना विस्तार हो जाता।

न थई प्रगट पाधरी, मुख एहेने वाणी।
धाख रही रुदे घणी, कलप्या दुख आणी।।५०।।

शुकदेवजी के मुख से भी इस वाणी का खुलासा नहीं हो सका। उनके मन में वर्णन करने की बड़ी चाहना थी। इसे न कर सकने से वह दु:खी हुआ।

कलकली कम्पमान थयो, रस टलियो एथी।
केम ते ए दुख खमी सके, ए रस जाय जेथी।।५१।।

कलकलाते (क्रोधित होते) हुए, कांपते हुए दु:खी हुए, क्योंकि इस आनन्द से वह वंचित रह गये (नहीं मिला)। ऐसा रस जिससे चला जाए वह कैसे सहन कर सकता है?

रास वाणी कह्या तणो, हुतो हरख अपार।
वाणी ब्रह्मांडनी सकलमां, रस रह्यो ए सार।।५२।।

रास की वाणी का वर्णन करने को उसे बड़ा हर्ष था, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की वाणी में यही रस सर्वश्रेष्ठ है।

रासनी रातनो वरणव, कीधो जुओ रे विचार।
नारायणजी नी रातनो, कोईक पामे पार।।५३।।

रास रात्रि का वर्णन, विचार करके देखो जो वर्णन किया गया है। नारायणजी की रात्रि का तो कोई-कोई पार पा भी जाते हैं (वर्णन कर लेते हैं)।

पण पार नथी रास रातनो, ए तो बेहद कही।
ते मांहें लीला बेहदनी, पंच अध्याई थई।।५४।।

परन्तु रास की रात्रि तो बेहद की है। उसका कोई पारावार नहीं है। उस बेहद की लीला का वर्णन पांच अध्याय में ही समाप्त कर दिया।

एनो अर्थ कहूं पाधरो, सुणजो तमे साथ।
रात एवी मोटी तो कही, जो लीला मोटी छे रास।।५५।।

इसका अर्थ मैं स्पष्ट बताती हूं। हे सुन्दरसाथजी ! तुम सुनो। रास की लीला बहुत भारी है, इसलिए रास की रात्रि भारी कही है।

न थाय पंच अध्याई केमे, मारा मुनीजी नी वाण।
पण नेठ लेवाणों निध समे, रस आवे सुजाण।।५६।।

शुकदेव मुनिजी की वाणी से यह पांच अध्याय में समाप्त नहीं हो सकती। वर्णन में रास का रस आ रहा था और इसे लेते समय कुछ रुकावट आ गयी। यह रुकावट परीक्षित के प्रश्न से आ गई।

Nijanand App

कलकली दुख कीधो घणो, पण सूं करे जाण।
पात्र विना पामे नहीं, रस बेहद वाण।।५७ ।।

शुकदेवजी को बड़ा दुःख हुआ, वह रोए, पर क्या करते? बेहद की वाणी का रस सुपात्र के बिना रह नहीं सकता।

पात्र विना तमे पामियां, मुनीजी कां करो दुख।
आज लगे ए रस तणो, कोणे लीधो छे सुख।।५८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मुनिजी! तुम क्यों रोते हो? तुमने तो बिना पात्रता के ही इतना रस पा लिया है। नहीं तो आज दिन तक इस रस का सुख किसने लिया है?

ए कागल तां अम तणो, तम साथे आव्यो।
रामत जोवा ब्रह्मांडनी, विध सघली लाव्यो।।५९ ।।

हे मुनिजी! यह कागज तो हमारा है जो तुम्हारे साथ आया था। इस ब्रह्माण्ड की पूर्ण लीला देखने के लिए यह ज्ञान हमारी हकीकत लाया था।

हद बेहदनी विगत, कागल मांहें विचार।
मुनीजी हाथ संदेसड़ो, आव्यो समाचार।।६० ।।

हद का और बेहद का भेद इस कागज (पंचाध्यायी) में है। हे मुनिजी! आपके हाथ से यह हमारा सन्देश आया था।

ए सुध सघली लई करी, वाले कह्यो सर्व सार।
बीजाने ए कोहेडा, नव लाधे बार।।६१ ।।

यह सम्पूर्ण सुध लाकर वालाजी ने हकीकत का ज्ञान बताया। दूसरों के लिए (जीवों के लिए) यह धुन्ध है, कुहेड़ा (उलझन, रहस्यमयी) है, जिससे वह आगे नहीं जा सकते। उनको दरवाजा ही नहीं मिलता।

बीजा सूं जाणे बापडा, जेणो होय ते जाणे।
अम विना बार बेहद तणा, बीजो कोण उघाडे।।६२ ।।

दूसरे बेचारे क्या जानें? जिसकी बात है वही जानेंगे। हमारे बिना बेहद के दरवाजे कौन खोलेगा?

लाख वार जुए फरी, एक कडी नव लाधे।
ब्रह्मांडना धणियो मांहें, पग मूकतां बांधे।।६३ ।।

लाख बार प्रयत्न करके देखो तो एक कड़ी भी किसी से खुलती नहीं। ब्रह्माण्ड के धनी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी थोड़ा-सा वर्णन करने में ही बंध जाते हैं।

ऐ रे कोहेडो हद तणो, बेहदी समाचार।
अमे देखाडूं पाधरा, बेहदना बार।।६४ ।।

यह हद के जीवों को कोहेड़ा है, धुन्ध है। बेहद के रहने वालों को घर की खबर है। अब मैं बेहद का सीधा दरवाजा दिखाती हूं।

Nijanand App

सुकजीनी वाणी सोहामणी, जोत बेहद ल्यावी।
फेर टालो तमे मांहेलो, जुओ आंख उघाडी।। ६५ ।।

शुकदेवजी की वाणी अच्छी है। जो बेहद की बात आई है, तुम आंख खोलकर देखो और अन्दर का अन्धकार (संशय) मिटाओ।

स्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रस्लोकी जांहें।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अर्थ जुओ तांहें।। ६६ ।।

शुकदेव मुनि ने दूसरे स्कन्ध में चार श्लोकों वाले भागवत का वर्णन किया है, जहां ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई बतायी है, उनके अर्थ देखो।

दीसे छे द्वार पाधरो, बेहदनो बार।
इंडाने कह्यूं सुपन, सुपन संसार।। ६७ ।।

बेहद का दरवाजा सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है। संसार के जीवों को स्वप्न कहा है और यह सारा संसार ही स्वप्न का है।

बेहद घरनी वाटडी, बेहदी जाणे।
हदनो जीव बेहदना, बार केम उघाडे।। ६८ ।।

यह बेहद के घर का रास्ता बेहद के रहने वाले ही जान सकते हैं। अब हद के जीव बेहद के दरवाजे कैसे खोल सकते हैं?

बार उघाडवा दोडियो, सुकजी सपराणो।
साथे परीछित चालियो, ते तां भारे चंपाणो।। ६९ ।।

बेहद का दरवाजा खुला। शुकदेवजी दौड़े और फंस गए। उनके साथ राजा परीक्षित भी चला था। उसके भार से शुकदेवजी भी दब गए।

बल कीधूं बलिए घणूं, द्वार द्वार पछटाणो।
साथे संघाती हद तणो, ते तां पाछल तणांणो।। ७० ।।

इसके बाद शुकदेवजी ने बहुत ताकत लगाई। दरवाजे-दरवाजे पर ठोकर खाई, क्योंकि उनके साथ में परीक्षित हद का साथी था, जिसके कारण वह भी पीछे खिंच गए।

रास तणो सुख सागर, ते तो नव केहेवाणो।
पाछल ताण थई घणी, अध वचे लेवाणो।। ७१ ।।

रास के सुख के सागर का वर्णन इसलिए नहीं कर सके, क्योंकि पीछे खिंचाई ज्यादा हो गई और अधबीच में वह लटक गये।

पात्र विना रस केम रहे, आवतो ढोलाणो।
पात्र हुता ते पामियां, रस इहां बंधाणो।। ७२ ।।

पात्र के बिना रस रह नहीं सकता, इसलिए जो रस आ भी रहा था वह भी गिर गया। जो इस रस के पात्र थे (ब्रह्मसृष्टियां) उनको यह रस अब मिला।

Nijanand App

ए रस वरस ऐंसी लगे, सारी पेरे सचवाणो।
लीधो पीधो साथमां, वखतो वखत वेहेचाणो।।७३ ।।

यह रस अस्सी वर्ष तक अच्छी तरह से सुरक्षित रहा। इसे समय-समय पर सुन्दरसाथ में बांटा गया। इसे लेकर सुन्दरसाथ ने पान किया।

नोट : यह अस्सी वर्ष, देवचन्द्रजी के जन्म १६३८ से १७१८ की मंजिल तक, जब श्रीजी ने जूनागढ़ में सबसे पहले हरजी व्यास को बेहद का ज्ञान दिया, थे।

एक टीपू ते बाहेर न निकल्यूं, साथ मांहें समाणो।
जेनो हतो तेणे माणियो, मांहोमांहें गंठाणो।।७४ ।।

इतने समय तक यह सुन्दरसाथ में ही सुरक्षित रहा। एक बूंद भी बाहर नहीं निकला। यह जिनका ज्ञान था उन्होंने गांठ में ही बांधकर रखा।

ए रस वाणी अमतणी, आंहीं आवी छलकाणो।
छोल आवी जेम सागर, रस तो प्रगटाणो।।७५ ।।

यह हमारी वाणी का रस है जो यहां आकर छलक गया अर्थात् (हरजी व्यास को मिला)। ज्ञान की छोल (पूर) सागर की तरह आई और यहां प्रकट हुई।

जोर कीधो घणुंए अमे, रस केमे न रखाणो।
प्रगट थासे पाधरो, रस बाहेर नंखाणो।।७६ ।।

हमने तो बहुत प्रयत्न किया पर यह रस हमसे ढांपा नहीं गया और प्रकट हुआ। अब यह रस बाहर प्रकट हो गया, इसलिए अब सबको जाहिर हो जाएगा।

ए रस आजना दिन लगे, क्यांहे न कलाणो।
लीला राखवा पाछल, जाण होय ते जाणो।।७७ ।।

इस रस को आज दिन तक किसी ने पहचाना नहीं, इसलिए ढका रहा। जो इस रस के पारखी (चाहने वाले) होंगे वह परख कर ले लेंगे।

साथ एणी पेरे आवसे, एणे रसे तणाणो।
वचन सर्वे सांभली, आवसे बंधाणो।।७८ ।।

इस प्रकार सुन्दरसाथ इस रस के खिंचाव से आएगा और तब वचनों को सुनकर हम में शामिल हो जाएगा।

ए वाणी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख।
घणी विधे ए रस पिए, बेहदने सुख।।७९ ।।

यह बेहद की वाणी श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुई। उन्होंने इस बेहद के सुख को अच्छी तरह से पिया।

ए वाणीने कारणे, घणे तपस्या कीधी।
ए वाणीने कारणे, घणे अगनज पीधी।।८० ।।

इस वाणी के लिए बहुतों ने तपस्या की तथा बहुतों ने अग्निपान किया।

Nijanand App

ए वाणीने कारणे, घणा देहज दमिया।
ए वाणीने कारणे, घणा कष्टज खमिया।। ८१ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अपने शरीर का दमन किया तथा अधिक कष्ट सहे।

ए वाणीने कारणे, घणा भैरव झंपावे।
ए वाणीने कारणे, तिल तिल देह कपावे।। ८२ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने भैरव झांप खाई (पहाड़ों पर चढ़कर कूदे) तथा अपने देह को तिल तिल कटवाया।

ए वाणीने कारणे, घणा संधाण सारे।
ए वाणीने कारणे, सिर अगनज बारे।। ८३ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अपने तन के जोड़ों के टुकड़े-टुकड़े किए तथा सिर को आग में जलाया।

ए वाणीने कारणे, अनेक दुख देखे।
एणी विधे ए रसने, केटला कहूं रे अलेखे।। ८४ ।।

इस वाणी के वास्ते बहुतों ने अनेक दुःख देखे। इस तरह से इस रस के वास्ते मैं कितना कहूं? यह लिखने में नहीं आता।

एक टीपू ते कोय न पामियो, एहेना रस तणी।
नाथ चौद भवनना, जे ब्रह्मांडना धणी।। ८५ ।।

इस वाणी के रस की एक बूंद भी किसी ने नहीं पाई। यहां तक कि चौदह लोकों के मालिक भगवान विष्णु भी वंचित रह गए।

बीजा नाम अनेक छे, पण लऊं केहेना।
ब्रह्मांडना धणी ऊपर, लेवाय नहीं तेहेना।। ८६ ।।

दूसरे भी अनेक नाम हैं, पर किस-किसके नाम बताऊं? ब्रह्माण्ड के मालिक के नाम के ऊपर वह शोभा नहीं देते।

ए रस आंहीं उभरयो, आवी अम मांहें।
नौतनपुरीमां जे निध, एहेवी नहीं क्यांहें।। ८७ ।।

यह रस हमारे अन्दर यहां आकर उछाल मार गया और नौतनपुरी में जो न्यामत आई, ऐसी कहीं नहीं आई।

जे निध गोकुल प्रगटी, तेतां सुख अलेखे।
अणजाणे सुख माणिया, घर कोई ना देखे।। ८८ ।।

जो न्यामत गोकुल में प्रकट हुई थी, उसके सुख तो बेशुमार थे। अनजाने में सुख तो लिए, किन्तु घर की पहचान नहीं थी।

ए सुख माण्यां सुपनमां, साथ राज संघाते।
घर दीठे भाजे सुपना, जोईए केणी भांते।। ८९ ।।

इस सुख को राजजी के साथ स्वप्न के संसार में लिया। घर को याद करके स्वप्न हट जाता है। उसकी हकीकत कैसे देखें?

Nijanand App

सुपन भागे सुख केम थाय, माया केम जोवाय।
घर तणो सुख जोईए, निद्रा उडीने जाय।। ९० ।।

स्वप्न भागने पर सुख कैसे होता है? माया कैसे देखी जाती है? घर के सुख देखने से यह नींद उड़ जाती है।

निद्रा उडे भाजे सुपन, त्यारे उथलो थाय।
सुख घेरनू ने सुपननू, बंने केम लेवाय।। ९१ ।।

नींद उड़ जाने पर स्वप्न टूट जाता है। तब यह हालत बदल जाती है। घर का सुख तथा स्वप्न का सुख दोनों साथ में कैसे ले सकते हैं? (नहीं मिल सकते)।

एणी विधे साथ प्रीछजो, सुख घणुए आण्यूं।
सुख सुपने गोकुल तणूं, अणजाणे माण्यूं।। ९२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथजी! समझना। तुम्हारे वास्ते बहुत सुख लाए हैं। गोकुल के सुख तो स्वप्न के थे और अनजाने में लिए थे।

रास तणा सुख सूं कहुं, जाणे मूलगां होय।
ए सुख साथ धणी विना, नव जाणे कोय।। ९३ ।।

रास के सुख की क्या कहूं? लगता था जैसे मूल घर के हों। इस सुख को सुन्दरसाथ और धनी के बिना और कोई नहीं जानता।

नवलो सरूप धणी तणो, नवलो सिणगार।
नवलो नेह ते आपणो, नवलो आकार।। ९४ ।।

अब यह धनी का नया स्वरूप है (योगमाया में रास का) नया सिनगार (शृंगार) है। अपना नया प्रेम है और आकार भी अपने नए हैं।

नवलो वन सोहामणो, नवलो वा वाय।
नवला जल जमुनातणा, लेहेरों ले वनराय।। ९५ ।।

नया वृन्दावन सुन्दर सुहावना है। नई हवा चल रही है। यमुनाजी का नया जल है और वन की बेलें लहरें ले रही हैं।

नवली प्रेमल वेलडी, नवी रेत सेत प्रकास।
नवलो पूनम चांदलो, सकल कला अजवास।। ९६ ।।

बेलों की सुगन्ध नई है, नई रेत का सुन्दर तेज है। पूर्णिमा का चन्द्रमा नया है जो सम्पूर्ण कलाओं के साथ उजाला कर रहा है।

नवला रंग पसु पंखी, वनमा करे टहुंकार।
नवला सुख श्री राजसुं, साथ लिए अपार।। ९७ ।।

नए रंग के पशु-पक्षी हैं जो वन में आवाज कर रहे हैं। नए सुख श्री राजजी के साथ सुन्दरसाथ बेशुमार लेते हैं।

Nijanand App

ए सुख केरी वातडी, जीव रुदे जाणे।
ए सुख साथ धणी विना, बीजो कोण माणे।। ९८ ।।

इस सुख की बातें जीव हृदय में ही जानता है। इस सुख को सुन्दरसाथ और धनी के बिना कौन मानेगा?

पण सुख सहु सुपनना, नेठ निद्रा मांहें।
ए सर्व जोगमाया तणां, घर द्रष्ट न थाए।। ९९ ।।

स्वप्न के सम्पूर्ण सुख निश्चित ही नींद में थे। यह सब सुख योगमाया के होने पर भी परमधाम के सुख की पहचान नहीं देते थे।

एक विध कही गोकुल तणी, आगल जोगमायानूं सुपन।
बंने सुख केम उपजे, विचारजो मन।। १०० ।।

एक हकीकत तुमको ब्रज की बताई, जो स्वप्न की है, और योगमाया की रास की बताई। दोनों का सुख कैसे मिला, यह मन में विचार करना।

ज्यारे सुख मायाना माणिए, घर ना आवे द्रष्ट।
ज्यारे घरतणा सुख जोइए, नहीं सुपननी सृष्ट।। १०१ ।।

जब माया के सुख में लीन हो जाते हैं, तो परमधाम की सुध नहीं रहती (नजर नहीं आता)। जब घर के सुखों को देखते हैं तो लगता है स्वप्न की सृष्टि कुछ नहीं है।

एम सुख सुपने माणिया, अणजाणे एह।
बंने लीलामां घर तणी, खबर नहीं तेह।। १०२ ।।

ब्रज और रास के सुखों को हमने अनजाने में लिया। ब्रज और रास में दोनों की लीलाओं में घर की सुध नहीं थी।

एणी विधे लीला बंने करी, घेर रे सिधाव्या।
आ त्रीजो ब्रह्मांड मायातणो, आपण लई आव्या।।१०३।।

इस तरह दोनों लीलाएं ब्रज और रास देखकर हम घर वापस गए और इस तीसरे ब्रह्माण्ड में माया की चाह लेकर हम आए।

इछा हुती जोयातणी, ते तां पूरण न थई।
अणजाणे सुख माणिया, धाख ऐणी पेरे रही।। १०४ ।।

हमारी माया देखने की जो इच्छा थी वह पूर्ण नहीं हुई थी। हमने बिना पहचान के ब्रज और रास को देखा, इसलिए हमारी चाहना पूरी नहीं हुई।

केम रहे धाख ते आपणी, त्रीजो ब्रह्मांड लाव्या।
साथे धणी पधारिया, तारतम लई आव्या।। १०५ ।।

हमारी कोई इच्छा बाकी न रहे, इसलिए इस तीसरे ब्रह्माण्ड में धनी हमको लाए। हमारे साथ में धाम धनी जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर आए।

Nijanand App

तारतम जोत उद्योत छे, तेणे सूं थाय।
एकी द्रष्टे घर जोइए, बीजी माया जोवाय।। १०६ ।।

तारतम के ज्ञान का उजाला साफ है। इससे एक दृष्टि से घर दिखाई देता है (घर का ज्ञान मिलता है) और दूसरी दृष्टि (तरफ) से माया भी दिखती है।

घर दीसे छे पाधरा, बीजी बे लीला जे कीधी।
ते ए सर्वे सांभरे, वली आ लीला त्रीजी।। १०७ ।।

इस तारतम ज्ञान से घर स्पष्ट दिखाई देता है। पहली लीला हमने ब्रज और रास में की थी। वह सब यहां याद आती है। इस तीसरी लीला की पहचान होती है।

सांभरे सर्वे वातडी, जीव द्रष्टे देखे।
आ तारतम जागी जोइए, ए तां बल अलेखे।। १०८ ।।

इन सब बातों की याद आने पर जीव को सब नजर आने लगता है। जब हम जागृत होकर देखते हैं तो समझ आती है कि तारतम की शक्ति अपार है।

आ लीलानी वातडी, जिभ्याए कही न जाय।
सुख जागतां माणिए, मनोरथ पुराय।। १०९ ।।

इस लीला की बात जुबान से कही नहीं जाती, पर जागृत होकर सुखों का अनुभव करते हैं, सब इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

ए बल आ लीलातणो, सर्वे वचन केहेसे।
रास प्रकास सुणी करी, बेहद वाणी लेहेसे।। ११० ।।

इस तारतम ज्ञान के बल से जो लीला देख रहे हैं इसका सब बयान होगा। जीव रास और प्रकाश की वाणी को सुनकर बेहद की वाणी (ज्ञान) ग्रहण कर लेगा।

धंन धंन ब्रह्मांड आ थयो, धंन धंन भरथ खंड।
धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां लीला प्रचंड।। १११ ।।

इसलिए यह ब्रह्माण्ड धन्य हुआ और भरतखण्ड भी धन्य हुआ। यह कलियुग भी धन्य हुआ जिसमें यह प्रबल लीला हुई।

धंन धंन पुरी नौतन, जेमां ए लीला थई।
लीला बंने पाधरी, रास प्रकासे कही।। ११२ ।।

नौतनपुरी भी धन्य हुई जिसमें यह लीला हुई। ब्रज और रास की दोनों लीलाएं रास और प्रकाश के ज्ञान द्वारा जाहिर हो गईं (पहले किसी को अखण्ड ब्रज और रास का पता ही नहीं था।)

धंन धंन धणी साथसो, बीजी वार जे आव्या।
धंन धंन तेज ते तारतम, प्रगट प्रकास लाव्या।। ११३ ।।

धन्य हैं हमारे धनी जो सुन्दरसाथ के लिए दूसरी बार आए। धन्य है तारतम का तेज जो साक्षात् ज्ञान लाया है।

Nijanand App

तारतमे रस बेहद तणो, सर्वे प्रगट कीधो।
घणी विधे सुख साथने, माया जोतां दीधो।। ११४ ।।

तारतम के ज्ञान (जागृत बुद्धि ने) बेहद के सभी सुखों को बता दिया तथा माया के ब्रह्माण्ड में बैठकर सुन्दरसाथ को हर तरह से सुख दिया।

तारतम रस वाणी करी, हूं पाऊं जेहेने।
जेहेर चढ्यूं होय भोमनो, सुख थाय तेहेने।। ११५ ।।

तारतम ज्ञान की वाणी के रस को मैं जिसको पिलाती हूं, उसको माया का जहर (जिसको चढ़ा हो) उतर जाता है और उसे अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है।

जे जीव निद्रा मूके नहीं, रस पाईए वाणी।
धणी लाव्या एटला माटे, माया बल जाणी।। ११६ ।।

यदि जीव नींद (माया) को न छोड़े तो उसको तारतम वाणी का रस पिलाइए। माया के बल को जानकर ही धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

जेहेर उतारवा साथनूं, लाव्या तारतम।
बेहद रस श्रवणे करी, अमे पाऊं एम।। ११७ ।।

सुन्दरसाथ के माया का जहर उतारने के लिए (माया छुड़ाने के लिए) तारतम वाणी लाए हैं, इसलिए हम इस बेहद की वाणी का रस सुनकर सुन्दरसाथ को पिलाएंगे।

ए रस श्रवणें जेहेने झरे, तेणे सूं करे जेहेर।
जागतां सुपन न उपजे, जोतां वेर।। ११८ ।।

यह बेहद की वाणी का रस जिसके कानों में चला जाए, उसे माया का जहर क्या कर सकता है? जागृत होने पर स्वप्न रहता नहीं है। जागृत अवस्था को स्वप्न से वैर है, अर्थात् जागृतावस्था में स्वप्न नहीं होता।

सुपन होय निद्रातणो, बहु ब्रह्मांड अलेखे।
जेणी खिणे आंख उघाडिए, त्यारे कांई न देखे।। ११९ ।।

सपना नींद में आता है। इसमें बहुत से ब्रह्माण्ड बनते हैं। जिस पल नजर खोलकर देखते हैं उस समय कुछ दिखाई नहीं देता है, अर्थात् यह सब ब्रह्माण्ड लय हो जाते हैं।

एम रस तारतम तणो, चढ्यूं जेहेर उतारे।
निरविखी काया करे, जीव जागे करारे।। १२० ।।

इस तरह से माया का जहर (नशा) उतारने के लिए यह तारतम वाणी है। यह तारतम वाणी का रस तन के सब जहर उतार देता है (सब नशे उतर जाते हैं) और जीव जागकर दृढ़ हो जाता है।

जागे सुख अनेक छे, आंहीं अलेखे।
चार पदारथ पामिए, जीव द्रष्टें देखे।। १२१ ।।

यहां जागृत होने पर अपार सुख है। जब जीव जागृत होकर देखता है तो चारों पदार्थ यहीं मिलते हैं (मनुष्य तन, भरतखण्ड, कलियुग में ब्रह्मसृष्टि का आना, तथा सबके सिरदार (प्रमुख) अक्षरातीत धाम धनी का आना)।

Nijanand App

पदारथ तारतम तणा, केम प्रगट कीजे।
आफणिए ए देखसे, जीव जगवी लीजे।। १२२ ।।

तारतम के इन पदार्थों को कैसे जाहिर करें? अपने आपको जगा लो (जीव को जगा लो)। जीव अपने आप देख लेगा।

ए वचन प्रगट पाधरा, हूं ता बाहेर पाड्या।
दरवाजा बेहदतणा, अनेक उघाड्या।। १२३ ।।

यह वचन बिल्कुल सीधे हैं जो मैंने कहे हैं। बेहद के सब दरवाजे खोल दिये हैं।

एक अखरनो पा लवो, कहीं ए प्रगट न थाय।
श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो केहेवाय।। १२४ ।।

एक अक्षर का चौथाई मात्र भी किसी ने जाहिर नहीं किया। धाम के धनी जब पधारे तब उन्होंने यह वाणी कही।

साथ जुए मायातणी, रामत जुजवा थई।
तेडी घरे सिधाविए, वाणी ते माटे कही।। १२५ ।।

सुन्दरसाथ माया के खेलों को अलग होकर देखने लगे हैं (कमल के पत्ते के समान)। सुन्दरसाथ को बुलाकर घर ले जाना है, इसलिए धाम धनी ने यह वाणी कही है।

ए रामत मायातणी, मुकाय नहीं।
ब्रह्मांडनी कारीगरी, सारी कीधी सही।। १२६ ।।

यह माया का खेल छोड़ा नहीं जाता है, इसलिए धाम धनी ने ब्रह्माण्ड की सारी कारीगरी (माया के झंझटों को) को सीधा कर दिया है।

पारेवडा गुडिया तणां, जेम कंडियो भरियो।
फूंक मारी जुए फरी, तरत खाली करियो।। १२७ ।।

मदारी अपनी चमत्कारी विद्या से पिटारी (करेंडिया) कबूतर और गुड़ियों से भर देता है और फूंक मारते ही कबूतर और गुड़ियों को गायब कर देता है।

एम बाजी मायातणी, ब्रह्मांडज रचियो।
देखी बाजी पारेवडा, साथ मांहें मचियो।। १२८ ।।

इसी तरह से माया के ब्रह्माण्ड को बाजीगर ने बनाया है और सुन्दरसाथ इस माया के लोगों को देखकर भूला पड़ा है।

आंबो वावी जल सीचियो, खिणमां फूले फलियो।
विध विधनी रंग वेलडी, वन ऊपर चढियो।। १२९ ।।

जिस तरह से बाजीगर आम की गुठली बोता है, पानी सींचता है, तुरन्त उस पर आम का फल लगा दिखाता है और तरह-तरह के रंग की बेलें उस पेड़ पर चढ़ी दिखाता है।

Nijanand App

ते देखी चित भरमियो, सुध नहीं सरीर।
विकल थई रंग वेलडी, चित ना रहे धीर।। १३० ।।

ऐसा देखकर चित्त भ्रम में भटक जाता है और देखने वाले को अपने शरीर की सुध नहीं रहती। बेल और पेड़ जब रहते नहीं तो मन विचलित हो जाता है।

ततखिण ते दीसे नहीं, बाजीगर हाथ।
आंबो न कांई वेलडी, एणे रंगे बांध्यो साथ।। १३१ ।।

उस समय आम और बेल कुछ दिखाई नहीं देते। बाजीगर के हाथ खाली होते हैं। ऐसे ही सुन्दरसाथ यहां माया के मोह में फंसकर भटक गए हैं।

सुध सरीर विसरी गई, विसरी गया घर।
कीडी कुंजर गली गई, अचरज या पर।। १३२ ।।

संसार में आकर ब्रह्मसृष्टि को अपने शरीर की सुध भूल गई तथा घर बिसर गया। इस तरह से यह चींटी कुंजर (हाथी) को निगल गई (माया ब्रह्मसृष्टि को खा गई)।

अदभुत एक जुओ सखी, ए अचरज मोटो।
वस्त खरी ने लई गयो, जेहेनो मूल छे खोटो।। १३३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! एक बड़ा भारी आश्चर्य यह देखो। जिस माया का मूल ही खोटा है, वह खरी वस्तु (ब्रह्मसृष्टि को) ले गई, खा गई।

निद्रा साथने जोर थई, एम सुपन वाध्यो।
रामत मांहेंथी बल करी, नव जाए काढ्यो।। १३४ ।।

सुन्दरसाथ को माया के इस नशे ने घेर लिया और वह इस तरह से माया के स्वप्न में बंध गया है। ऐसे खेल में से ताकत करके निकालना कठिन है।

ते माटे वाणी बेहद तणी, केहे निद्रा टालूं।
सुपन न दऊं वाधवा, चढ्यूं जेहेर उतारूं।। १३५ ।।

इसलिए इस बेहद वाणी का ज्ञान सुनाकर सुन्दरसाथ की नींद को हटा देती हूं। सपने को और नहीं बढ़ने दूंगी। माया का चढ़ा हुआ जहर उतार दूंगी।

कुंजर काढूं कीडी मुख, सुध आणूं सरीर।
वचन कही ने जुजवा, करूं खीर ने नीर।। १३६ ।।

हाथी को चींटी के मुख में से निकालकर (ब्रह्मसृष्टि को माया में से निकालकर) उन्हें मूल घर की सुध दूंगी तथा बेहद के वचन कह करके माया और ब्रह्म (दूध और पानी) को अलग-अलग कर दूंगी।

खोटाने खोटू करूं, साचा सागर तारूं।
वाणिए रस पाई करी, साथ ना कारज सारूं।। १३७ ।।

माया के जीवों को माया में, और सच्ची ब्रह्मसृष्टियों को वाणी का रस पिलाकर परमधाम के सुख के सागर में ले जाऊंगी। इस तरह से सुन्दरसाथ के कार्य सिद्ध कर दूंगी।

Nijanand App

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवालूं।। १३८ ।।

तारतम वाणी का रस (ज्ञान) पिलाकर सुन्दरसाथ को घर (परमधाम) पहुंचा दूंगी। इसलिए यह तारतम वाणी धन्य-धन्य है, जिससे ज्ञान का उजाला हुआ।

ए अजवालूं साथने, रामत जोवा लाव्या।
बीजा बंधाणा बंधसूं, विध विधनी माया।। १३९ ।।

इस तारतम के उजाले में सुन्दरसाथ को खेल दिखाने के लिए लाई हूं। दूसरे जीव माया के तरह-तरह के बन्धनों से बंधे पड़े हैं।

बीजा त्रीजा हूं तो कहुं, जो साथने माया थइ भारी।
साथ सुपन जुए सत करी, तो हूं कह्यूं विचारी।। १४० ।।

दूसरा और तीसरा मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि सुन्दरसाथ माया में फंसे पड़े हैं। अब सुन्दरसाथ माया को ही सत (सत्य, अखण्ड) समझ कर देख रहे हैं, इसीलिए मैं विचार करके कहती हूं।

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाय बंने पेर।
सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर।। १४१ ।।

विचार करके स्वप्न को छुड़ाएं तो दोनों काम बन जाएं। सपने के सुख भी देख लें और हंसते हुए घर में भी उठें।

तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सहु सुपन।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन।। १४२ ।।

तारतम वाणी से विचार कर यदि देखें तो सुन्दरसाथ के अलावा सब स्वप्न है, इसलिए माया के झूठ की पहचान कराकर सुन्दरसाथ को जगाऊं, ताकि सुन्दरसाथ के मन में चाहना न रह जाए।

ते माटे पेर बंने करूं, सुपन हरखे समावूं।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावूं।। १४३ ।।

सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन दोनों युक्तियों के साथ सुन्दरसाथ को जगाऊंगी कि वह सपने के सुख भी देख लेंगे और हंसते-गाते घर में भी उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९३६ ।।

दूध पाणीनो विछोडो

वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणे आधार।
रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे।। १ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते बिना पूछे ही श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कह रही हैं ताकि किसी का संशय न रहे।

आगे एम वचन केहेवाय, जे कीडी पग कुंजर बंधाय।
डूंगरतां त्रणे ढांकियो, पाधरो प्रगट कोणे नव थयो।। २ ।।

आगे ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर में हाथी बंध गया और कहते हैं कि तिनके ने पहाड़ को ढांप लिया है, किन्तु किसी ने भी इसका भेद नहीं खोला।

Nijanand App